॥ श्री ॥

लघीयस्त्रय

LAGHIYASTRAYA

आ. अकलंक · ८वीं शती · अभिलेख २७/९०

श्री गण्डविमुक्तदेव-1 → **आ. अकलंक**

संक्षिप्त परिचय

भट्ट अकलंकदेव कृत — प्रमाण-प्रवेश, नय-प्रवेश और प्रवचन-प्रवेश इन तीन लघु प्रकरणों का संग्रह; जैन न्याय की आधारशिला।

इसी पर प्रभाचन्द्राचार्य ने न्यायकुमुदचन्द्र जैसी बृहत् टीका रची।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

लघीयस्त्रय — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक २७ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. अकलंक; रचना-काल ८वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक २९५) के अनुसार इनका समय ११५८–११८२ है तथा गुरु श्री गण्डविमुक्तदेव-१। इसी लेखनी से तत्त्वार्थराजवार्तिक, न्यायविनिश्चय, प्रमाणसंग्रह, अष्टशती भी इस सूची में सम्मिलित हैं। समकालीन ग्रन्थों में हरिवंशपुराण परिगणित हैं।

इसी लेखनी से

तत्त्वार्थराजवार्तिक · न्यायविनिश्चय · प्रमाणसंग्रह · अष्टशती

समकालीन ग्रन्थ

हरिवंशपुराण

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति २७ — मूल छायाचित्र

← न्यायावतार

तत्त्वार्थराजवार्तिक →